नईदुनिया



भारत-रूस के खिलाफ पाक की साजिश को तालिबान ने किया नाकाम

गुप्त बैठक में सभी मांगें ठुकराकर दिया करारा जवाब

कंधार

अफगानिस्तान के कंधार में हाल ही में संपन्न हुई एक गुप्त बैठक के दौरान पाकिस्तान की एक बड़ी साजिश का पर्दाफाश हुआ है, जिसे तालिबान ने पूरी तरह से विफल कर दिया। गत 22 अक्टूबर को जनरल इनायत हुसैन के नेतृत्व में पाकिस्तान का एक उच्चस्तरीय सुरक्षा और कूटनीतिक प्रतिनिधिमंडल कंधार पहुंचा था। इस प्रतिनिधिमंडल में सुरक्षा क्षेत्र के चार शीर्ष अधिकारी और विदेश मंत्रालय का एक प्रतिनिधि शामिल था। बैठक में पाकिस्तान ने भारत और रूस के खिलाफ कई प्रस्ताव रखे और तालिबान के सामने पांच प्रमुख मांगें पेश कीं, जिनमें जलालाबाद में भारतीय कांसुलेट को बंद करना और अफगानिस्तान के रास्ते रूस की लाजिस्टिक सहायता को ईरान तक पहुंचने से रोकना भी शामिल था। हालांकि, तालिबान के शीर्ष नेतृत्व ने पाकिस्तान की इन सभी मांगों को सिरे से खारिज कर दिया।

पाकिस्तानी प्रतिनिधिमंडल में शामिल अधिकारियों की यह गुप्त बैठक कंधार के गवर्नर मुल्ला शिरीन, प्रवक्ता जबीहुल्लाह मुजाहिद, उप गृह मंत्री सद्र इब्राहिम, रक्षा मंत्रालय के मुख्य निरीक्षक मुफ्ती लुत्फुल्लाह हकीमी और सैन्य खुफिया प्रमुख मुल्ला अब्दुल कादूस जैसे तालिबान के कई वरिष्ठ और प्रभावशाली नेताओं के साथ हुई थी। बैठक के दौरान पाकिस्तान ने तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान के नेताओं को सौंपने, अफगान लड़ाकों की पाकिस्तान में एंट्री रोकने, पाकिस्तान में तालिबान की संपत्ति बेचने, जलालाबाद स्थित भारतीय कांसुलेट को बंद करने तथा रूसी लाजिस्टिक सप्लाई को बाधित करने की मांग उठाई। पाकिस्तान लंबे समय से अफगानिस्तान में भारत की बढ़ती राजनयिक मौजूदगी से असहज रहा है और वह लगातार भारतीय कांसुलेट को अपनी सुरक्षा के लिए चुनौती बताता आया है।

लेकिन तालिबान ने पाकिस्तान के इस दबाव के आगे झुकने से साफ इंकार कर दिया। भारतीय कांसुलेट को बंद करने की मांग पर पलटवार करते हुए तालिबान ने पाकिस्तान के सामने एक कड़ी शर्त रख दी और कहा कि यदि जलालाबाद में भारतीय कांसुलेट बंद किया जाता है, तो उसी स्थान पर मौजूद पाकिस्तानी कांसुलेट को भी तुरंत बंद करना होगा। इस कड़े रुख से तालिबान ने स्पष्ट संदेश दे दिया कि वह भारत के राजनयिक हितों के खिलाफ कोई कदम नहीं उठाएगा। इसके अलावा, रूस की लाजिस्टिक सहायता को रोकने के प्रस्ताव को भी तालिबान ने पूरी तरह से ठुकरा दिया।

दूसरी ओर, टीटीपी के नेताओं को सौंपने की पुरानी पाकिस्तानी मांग पर तालिबान ने आंशिक रुख तो दिखाया, लेकिन उसके बदले में पाकिस्तान के सामने अपनी ही एक बड़ी शर्त रख दी। तालिबान ने पाकिस्तान को कुछ पुख्ता दस्तावेज और सबूत सौंपे, जिनमें पाकिस्तानी धरती पर सक्रिय तालिबान विरोधी संगठनों के कार्यालयों और प्रशिक्षण केंद्रों का कच्चा-चिट्ठा मौजूद था। तालिबान ने दोटूक शब्दों में कहा कि यदि पाकिस्तान उनकी सुरक्षा चिंताओं को दूर करना चाहता है, तो उसे सबसे पहले अपनी जमीन पर चल रहे उन आतंकी ठिकानों और कार्यालयों को बंद करना होगा ।

न्यूज ब्रीफ

नेपाल के सोलुखुम्बु में दो हेलिकाप्टरों की टक्कर, एक विदेशी नागरिक की मौत, एक घायल



काठमांडू। नेपाल के सोलुखुम्बु में दो हेलिकाप्टरों के आपस में टकराने से एक व्यक्ति की मौत हो गई, जबकि एक अन्य घायल हो गया। नेपाल नागरिक उड्डयन प्राधिकरण के अनुसार, फिस्टेल और डायनेस्टी एयर के हेलिकाप्टर फेरीचे हेलिपैड पर उतरते समय आपस में टकरा गए। प्राधिकरण के सूचना अधिकारी ज्ञानेन्द्र भुल ने बताया कि फेरीचे हेलिपैड पर उतरने के दौरान दोनों हेलिकाप्टरों के पंखों के टकराने की जानकारी मिली है। उन्होंने कहा कि दुर्घटना के संबंध में विस्तृत जानकारी जुटाने का प्रयास किया जा रहा है। सोलुखुम्बु जिला पुलिस कार्यालय के डीएसपी नवीनराज बुढाथोकी के अनुसार, खुम्बु पासांगल्हामु फेरीचे हेलिपैड पर उतरते समय दोनों हेलिकाप्टरों के पंखे आपस में टकरा गए, जिससे यह दुर्घटना हुई। मृतक किस देश के नागरिक हैं, इसकी पहचान अभी तक नहीं हो पाई है। दुर्घटना में घायल एक व्यक्ति को इलाज के लिए माउंटेन हेलिकाप्टर से भेजा गया है। सोलुखुम्बु के पुलिस निरीक्षक मौसम तामांग के अनुसार, मृतक विदेशी नागरिक हैं।

अमरीका समुद्र में डुबो रहा पुराने जहाज और भारी भरकम कबाड



वाशिंगटन। अमरीका द्वारा समुद्र में पुराने जहाजों और भारी-भरकम कबाड़ को डुबोने का काम किया जा रहा है। यह काम अमेरिका द्वारा सोच-समझकर एक वैज्ञानिक अभियान के तहत किया जा रहा है। अमेरिका में हाल ही में डेलावेयर के तट के पास 180 फीट लंबे एक पुराने मछली पकड़ने वाले जहाज को समुद्र में डुबो दिया गया। वहीं, मिसिसिपी के तट पर 31 टन के प्रोपेन गैस टैंक और फायर ब्रिगेड की ट्रेनिंग में इस्तेमाल होने वाले स्टील टावर को पानी के नीचे उतारा गया। पहली नजर में यह कबाड़ को समुद्र में फेंकने जैसा लग सकता है, लेकिन इसके पीछे समुद्री जीवों के लिए नया घर बनाने की पर्यावरण अनुकूल योजना है। इन ढांचों को कृत्रिम चट्टान यानी आर्टिफ़िशियल रीफ़ बनाया जा रहा है, जहां मछलियां छिप सकें, भोजन पा सकें और अपना प्रजनन कर सकें। अमरीका के डेलावेयर तट के पास एफ/वी कैलकासीयू पास नाम के पुराने जहाज को जानबूझकर समुद्र में डुबोया गया। करीब 180 फीट लंबा यह जहाज इंडियन रिवर इनलेट से लगभग 26 मील दूर तय रीफ साइट पर उतारा गया। यह जहाज पहले समुद्र में तेल के कुओं तक सामान पहुंचाने के काम आता था और बाद में इसे मछली पकड़ने के काम में लाया जाने लगा। जानकारों के अनुसार जब जहाज पुराना हो गया और काम के लायक नहीं रहा, तो इसे कबाड़ में बदलने के बजाय समुद्री जीवन के काम में लाने का फैसला किया गया। इसके बाद इसे 1 डालर के सांकेतिक भुगतान पर संबंधित मरीन ठेकेदारों को सौंप दिया गया। जहाज को सीधे समुद्र में नहीं डाला जाता। सबसे पहले इसमें से तेल, खतरनाक रसायन और ढीला कबाड़ पूरी तरह से हटाया जाता है, ताकि समुद्री पर्यावरण को किसी तरह का नुकसान न पहुंचे।

भारत के विदेश सचिव विक्रम मिस्री नेपाल के दौरे पर रहेंगे

काठमांडू। भारतीय विदेश सचिव विक्रम मिस्री चार एवं पांच नवंबर को नेपाल के आधिकारिक दौरे पर रहेंगे।



इस दौरान वे आपसी हित के द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर चर्चा करेंगे और कई प्रमुख नेताओं से मुलाकात भी करेंगे। भारत के विदेश मंत्रालय के अनुसार भारत और नेपाल के बीच मजबूत और मैत्रीपूर्ण संबंध हैं, जिनमें सहयोग के विभिन्न क्षेत्रों में काफी प्रगति हुई है। विदेश सचिव का यह दौरा दोनों देशों के बीच नियमित उच्चस्तरीय आदान-प्रदान की परंपरा को आगे बढ़ाएगा और व्यापक द्विपक्षीय साझेदारी को और मजबूत करने में मदद करेगी। वहीं, नेपाल के विदेश मंत्रालय के अनुसार मिस्री नेपाल के विदेश सचिव अमृत राई के साथ द्विपक्षीय वार्ता करेंगे। बातचीत में नेपाल-भारत संबंधों के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा होगी और आपसी हितों के मुद्दों पर विचारों के आदान-प्रदान का अवसर मिलेगा। मंत्रालय के मुताबिक दोनों पक्षों के बीच दोनों देशों के लंबे समय से चले आ रहे घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण संबंधों को और मजबूत करने के उपायों पर भी चर्चा होने की उम्मीद है। मिस्री नेपाल के प्रधानमंत्री बालेन्द्र शाह, विदेशमंत्री शिशिर खनाल सहित वरिष्ठ नेपाली अधिकारियों से शिष्टाचार मुलाकात भी करेंगे। वह पांच नवंबर को नई दिल्ली लौट जाएंगे ।

अमेरिका ने ईरान के केशम द्वीप पर किया हमला

वाशिंगटन (अमेरिका)/तेहरान (ईरान)

अमेरिका ने कतर के अधिकारियों के जरिए ईरान के साथ चल रही समझौते की बातचीत के दौरान केशम द्वीप पर हमला किया है। तीन अमेरिकी अधिकारियों ने कहा कि अमेरिकी सेना ने ईरान के केशम द्वीप पर सीमित हमले किए। उन्होंने इसे बचाव की कार्रवाई बताया और कहा इसका मकसद इलाके में मौजूद अमेरिकी संपत्तियों की सुरक्षा करना है। सीएनएन की रिपोर्ट के अनुसार, इन तीन अधिकारियों से एक ने बताया कि यह हमला ईरान के एक अमेरिकी विमान पर गोलीबारी करने के जवाब में किया गया। यह कोई बड़ा सैन्य अभियान नहीं है। दूसरे अधिकारी ने कहा, यह कदम बचाव के लिए उठाया गया, क्योंकि ईरान, अमेरिकी संपत्तियों के खिलाफ सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलों का इस्तेमाल कर रहा था। रिपोर्ट के अनुसार, देश में मध्यावधि चुनाव से ठीक पहले की गई इस कार्रवाई से लगता है कि ईरान के साथ स्थिति अभी भी सुलझी नहीं है और सैन्य टकराव की संभावना अभी भी बनी हुई है।



इस हमले की जानकारी रखने वाले एक अधिकारी ने बताया कि प्रशासन ने जानबूझकर इस हमले को गुप्त रखा, ताकि बचाव के इस कदम को जरूरत से ज्यादा तूल न मिले। उन्होंने कहा कि इन हमलों का मकसद अमेरिकी संपत्तियों की सुरक्षा करना था। यह हमला ऐसे समय पर हुआ है जब राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सोशल मीडिया पर कहा कि तेहरान के साथ कूटनीति अभी भी काम कर रही है और एक समझौता हो सकता है।

ट्रंप ने फाक्स न्यूज पर एक कार्यक्रम में ईरान में नए हमलों की खबरों पर सीधे तौर पर तो कुछ नहीं कहा, लेकिन ईरान में युद्ध शुरू करने के अपने फैसले का बचाव किया और संकेत दिया कि हाल के दिनों में कोई लड़ाई नहीं हुई है। ट्रंप ने कहा, यह हलका युद्ध है। यह भीषण युद्ध नहीं है। अगर वे कोई समझौता नहीं करते हैं तो युद्ध हो सकता है। लेकिन वे बहुत शिद्दत से समझौता करना चाहते हैं और इस बात की काफी अच्छी संभावना है कि हम कोई समझौता कर लें।

उपराष्ट्रपति जे.डी. वेंस ने भी कुछ ऐसा ही रुख अपनाते हुए पत्रकारों से कहा कि अमेरिका और ईरान ने युद्ध को खत्म करने की दिशा में कुछ प्रगति की है। उपराष्ट्रपति ने कहा, ईरानी हमेशा थोड़े अप्रत्याशित होते हैं और जैसा कि राष्ट्रपति हमेशा कहते हैं कि उनके पास सैन्य और गैर सैन्य दोनों तरह के विकल्प मौजूद हैं। लेकिन हमने निश्चित रूप से कुछ प्रगति की है। देखते हैं कि क्या हम इसमें और आगे बढ़ सकते हैं। सीबीएस न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, कतर की अगुवाई में तीन दिनों तक चली अप्रत्यक्ष और बंद दरवाजे की बातचीत से कोई ठोस नतीजा नहीं निकला है। ईरान ने कहा कि अब गेंद अमेरिका के पाले में है। हालांकि राष्ट्रपति ट्रंप ने ईरान के साथ बातचीत में प्रगति का संकेत दिया। इससे पहले ट्रंप ने पत्रकारों को बताया कि रविवार को उनकी इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के साथ अच्छी बातचीत। उनसे ईरान युद्ध पर चर्चा की गई।

एक्सियोस की रिपोर्ट के अनुसार, सूत्रों ने बताया कि राष्ट्रपति ट्रंप चाहते हैं कि बातचीत को आगे बढ़ने दिया जाए, जबकि नेतन्याहू ईरान पर हमले फिर से शुरू करने का दबाव बना रहे हैं। चुनाव के दिन से पहले लिंकन मेमोरियल रिफ्लेक्टिंग पूल पर अपने आखिरी भाषण के दौरान ट्रंप ने कई बार ईरान का जिक्र किया और कहा, यह कोई युद्ध नहीं है। उल्लेखनीय है कि केशम द्वीप ईरान के बंदर अब्बास बंदरगाह शहर से लगभग 14 मील दूर है। यह होर्मुज जलडमरूमध्य से होने वाले यातायात पर ईरान का नियंत्रण बनाए रखने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। युद्ध से पहले हर दिन लगभग 2 करोड़ (20 मिलियन) बैरल तेल इसी रास्ते से होकर गुजरता था। इस युद्ध के दौरान अमेरिका पहले भी इस द्वीप को निशाना बना चुका है।

क्या मिडटर्म चुनावों में हार मान चुके हैं डोनाल्ड ट्रंप



वीटो को लेकर दिए बयान ने खड़े किए सवाल

वाशिंगटन

अमेरिका में आगामी मिडटर्म चुनावों को लेकर राजनीतिक हलचल अपने चरम पर है, और मतदान से ठीक पहले पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के हालिया बयानों से यह संकेत मिलने लगे हैं कि वे चुनाव परिणामों को लेकर आशंकित हैं। ट्रंप ने अपने एक साक्षात्कार में यह स्पष्ट कर दिया है कि यदि डेमोक्रेटिक पार्टी अमेरिकी कांग्रेस के दोनों सदनों में बहुमत हासिल करने में सफल रहती है, तो वे डेमोक्रेट्स के विधायी फैसलों और प्रस्तावों को रोकने के लिए अपने वीटो अधिकार का पूरी ताकत से इस्तेमाल करेंगे। उन्होंने दोटूक शब्दों में कहा कि वे अपने प्रशासन के अब तक के कामकाज और नीतियों को विपक्षी पार्टी के हाथों बर्बाद नहीं होने देंगे और आवश्यकता पड़ने पर मिस्टर वीटो की भूमिका निभाएंगे। ट्रंप का मानना है कि यदि डेमोक्रेट्स संसद पर नियंत्रण पा लेते हैं, तो शुरुआती दौर में दोनों पक्षों के बीच कड़ा टकराव देखने को मिल सकता है, जहां डेमोक्रेट्स अपने बिल पास कराएंगे और वे उन्हें वीटो कर देंगे। हालांकि, उनका यह भी अनुमान है कि लंबे समय तक विधायी कामकाज ठप रहने और समय की बर्बादी के बाद आखिरकार विपक्षी नेताओं को बातचीत की टेबल पर आना ही पड़ेगा। अमेरिका में मध्यावधि चुनावों में प्रतिनिधि सभा की सभी 435 सीटों और सीनेट की 35 सीटों पर आने वाले नतीजों से यह तय होगा कि ट्रंप के राष्ट्रपति कार्यकाल के बाकी बचे दो सालों में अमेरिकी संसद का नियंत्रण किसके हाथ में रहेगा। विश्लेषकों का मानना है कि रिपब्लिकन पार्टी को डेमोक्रेट्स से कड़ी टक्कर मिलने का अंदेशा इसलिए भी है क्योंकि मौजूदा समय में कई मुद्दों को लेकर जनता में असंतोष देखा जा रहा है। ईरान के साथ हुए सैन्य संघर्ष में अमेरिका को हुए नुकसान, होर्मुज संकट के चलते आसमान छूते तेल और गैस के दाम, तथा बढ़ती घरेलू महंगाई ने ट्रंप की लोकप्रियता पर असर डाला है। इसके अलावा, कनाडा, क्यूबा, ब्राजील और भारत जैसे प्रमुख देशों के साथ बिगड़े कूटनीतिक रिश्तों, आयातित वस्तुओं पर भारी-भरकम टैरिफ लगाने की नीतियों और रूस से तेल आयात करने वाले देशों पर प्रतिबंधों की धमकियों ने उनकी मुश्किलें और बढ़ा दी हैं। दूसरी ओर, पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा के मैदान में उतरकर डेमोक्रेट्स के पक्ष में मोर्चा संभालने से चुनावी समीकरणों में तेजी से बदलाव आया है, जिसके चलते ट्रंप प्रशासन अपनी रणनीतिक और घरेलू मोर्चे की विफलताओं को छिपाने के लिए अब वीटो पावर को अपना सबसे बड़ा रक्षा कवच बनाने की तैयारी में जुट गया है।

एआई और रोबोट के प्रसार से छिन सकती है नौकरियां : विशेषज्ञ



वाशिंगटन। टेक्नोलाजी जगत की अग्रणी कंपनी माइक्रोसाफ्ट के सह-संस्थापक बिल गेट्स ने आने वाले समय को लेकर जो चौंकाने वाली भविष्यवाणियां की हैं, उन्होंने पूरी दुनिया को सोचने पर मजबूर कर दिया है। हाल ही में माइक्रोसाफ्ट द्वारा अपने लगभग 60,000 कर्मचारियों को स्वेच्छा से नौकरी छोड़ने का पैकेज आफर करने की खबर से टेक जगत में बड़ी उथल-पुथल मची है। बिल गेट्स ने चेतावनी दी है कि अगले 20 साल इंसानियत के लिए अब तक के सबसे ज्यादा बदलाव और उथल-पुथल भरे रहने वाले हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई और इंसानी शक्ल वाले रोबोट्स हमारे काम करने के तरीके, उद्योग और रोजमर्रा की जिंदगी को पूरी तरह बदल कर रख देंगे। भले ही आगे चलकर एआई से दुनिया में तरक्की आए, लेकिन जब तक समाज इस नई तकनीक के साथ तालमेल नहीं बिठा पाता, तब तक का यह दौर बेहद डरावना होगा। बदलाव के इस दौर में बहुत से लोगों की नौकरियां छिन जाएंगी और उनके सामने जीवन का नया मकसद ढूंढना भी मुश्किल हो जाएगा। जानकारों के अनुसार एआई का असर सिर्फ आईटी या टेक कंपनियों तक सीमित नहीं रहने वाला है। हर वह काम जो एक ही ढर्रे पर बार-बार किया जाता है, जहां डेटा या सूचनाओं को प्रोसेस किया जाता है या जहां ग्राहकों से बातचीत होती है, वह सब एआई के निशाने पर है।

क्वाड देशों का आर्थिक सुरक्षा पर जोर, अहम खनिजों और एआई में बढ़ाएंगे सहयोग

बैठक में वैश्विक स्थिरता और समृद्धि के लिए आर्थिक सुरक्षा को अपरिहार्य बताया



वाशिंगटन

भारत, अमेरिका, जापान और आस्ट्रेलिया ने हिंद-प्रशांत क्षेत्र की आर्थिक सुरक्षा को मजबूत करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। क्वाड देशों के विदेश मंत्रियों ने अटलांटा में हुई बैठक में अहम खनिजों की आपूर्ति श्रृंखला को सुदृढ़ करने, एआई में सहयोग बढ़ाने और समुद्री सुरक्षा को प्राथमिकता देने पर सहमति व्यक्त की है। विगत 31 अक्टूबर को संपन्न हुई इस बैठक के बाद जारी संयुक्त बयान में वैश्विक स्थिरता और समृद्धि के लिए आर्थिक सुरक्षा को अपरिहार्य बताया गया। चारों देशों ने उन आर्थिक दबावों, मनमाने निर्यात प्रतिबंधों और बाजार को विकृत करने वाली नीतियों पर चिंता जताई, जो वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं को प्रभावित कर सकते हैं।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक क्वाड के अहम खनिज पहल के तहत, सदस्य देश इलेक्ट्रानिक कचरे और कबाड़ से खनिजों को पुन: प्राप्त करने, प्रसंस्करण संयंत्रों के विकास और वैकल्पिक आपूर्ति श्रृंखलाओं के निर्माण पर काम करेंगे। अमेरिका ने भारत और आसियान देशों में ऐसी सुविधाओं के लिए 1 करोड़ डालर की सहायता देने की प्रतिबद्धता जताई है। इसका मुख्य उद्देश्य इलेक्ट्रिक वाहन, बैटरी और सेमीकंडक्टर जैसे अहम उद्योगों के लिए आवश्यक खनिजों पर किसी एक आपूर्तिकर्ता पर निर्भरता कम करना है। एआई क्षेत्र में भी क्वाड ने बड़ी पहल की है, जिसके तहत हिंद-प्रशांत में भरोसेमंद एआई तकनीक तक पहुंच बढ़ाने के लिए 8.5 करोड़ डालर से अधिक की तकनीकी और वित्तीय सहायता दी जाएगी। इसके लिए क्वाड एसआई एक्सेलेरेटर का उपयोग किया जाएगा। बैठक में समुद्री सुरक्षा को आर्थिक समृद्धि से जोड़ते हुए होर्मुज स्ट्रेट, लाल सागर और बाब-अल-मंदेब स्ट्रेट जैसे अहम मार्गों पर नौवहन की स्वतंत्रता और व्यापारिक जहाजों की सुरक्षित आवाजाही सुनिश्चित करने पर जोर दिया। संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून अभिसमय के अनुरूप समुद्री मार्गों पर किसी भी प्रकार के अवरोध या टोल के बिना आवागमन को सुनिश्चित करने की बात भी कही गई। भारत की समुद्री भूमिका को दर्शाते हुए चेन्नई से पर्थ तक क्वाड की दूसरी समुद्री पर्यवेक्षक यात्रा का भी उल्लेख किया। 2027 में सी ड्रैगन अभ्यास के दौरान चारों देश अपना पहला संयुक्त अभ्यास करने की तैयारी में हैं, साथ ही समुद्री क्षेत्र जागरूकता पर एक संगोष्ठी की भी योजना है। डिजिटल बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए सुरक्षित और तेज समुद्री डेटा केबल नेटवर्क विकसित करने पर सहमति बनी। सेमीकंडक्टर और एआई हार्डवेयर की आपूर्ति श्रृंखला में कमजोर कड़ियों की पहचान के साथ-साथ 5जी, 6जी और ओपन आरएएन जैसी तकनीकों में भरोसेमंद सहयोग बढ़ाने की योजना है।

कम्युनिस्ट पार्टी आफ चाइना के नेता लियू हैक्सिंग पाक के दौरे पर, संबंधों को और मजबूत करने पर जोर

इस्लामाबाद

कम्युनिस्ट पार्टी आफ चाइना की केंद्रीय समिति के अंतरराष्ट्रीय विभाग के मंत्री लियू हैक्सिंग ने पाकिस्तान के नागरिक और सैन्य नेतृत्व के साथ कई उच्च-स्तरीय बैठकें कीं। उन्होंने प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ, चीफ आफ डिफेंस फोर्सेज फील्ड मार्शल सैयद आसिम मुनीर और उप प्रधानमंत्री इशाक डार के साथ द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने और क्षेत्रीय व अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रमों पर चर्चा की।

द न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, पाकिस्तान विदेश कार्यालय ने बताया कि लियू हैक्सिंग एक नवंबर को पाकिस्तान पहुंचे। यह उनका पहला आधिकारिक दौरा है। प्रधानमंत्री के साथ बैठक में लियू ने द्विपक्षीय सहयोग को और गहरा करने के तरीकों पर चर्चा की। इस दौरान शहबाज ने दोनों देशों के बीच संबंधों को और मजबूत करने के लिए निरंतर राजनीतिक जुड़ाव और पार्टियों के बीच आपसी आदान-प्रदान को बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

लियू और उनके प्रतिनिधिमंडल का स्वागत करते हुए प्रधानमंत्री ने दोहराया कि पाकिस्तान और चीन के बीच एक बेहद मजबूत, समय की कसौटी पर खरी उतरी और हर मौसम में कायम रहने वाली रणनीतिक सहकारी साझेदारी है। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के बीच दोस्ती आपसी विश्वास, सम्मान और दोनों देशों के लोगों के बीच गहरे संबंधों पर टिकी है।

शहबाज ने दोनों देशों के बीच व्यापार, निवेश, कनेक्टिविटी, बुनियादी ढांचे के विकास, सूचना प्रौद्योगिकी और कृषि के आधुनिकीकरण में सहयोग



बढ़ाने पर दोनों पक्षों के साझा फोकस को रेखांकित किया। लियू ने चीनी नेतृत्व की ओर से शुभकामनाएं दीं और पाकिस्तान के साथ अपनी पुरानी दोस्ती को और गहरा करने के लिए बीजिंग की प्रतिबद्धता को दोहराया।

दोनों पक्षों ने क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रमों पर भी विचारों का आदान-प्रदान किया और द्विपक्षीय तथा बहुपक्षीय मंचों पर करीबी समन्वय और सहयोग बनाए रखने की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया। प्रधानमंत्री ने दौरे पर आए चीन के नेता और उनके प्रतिनिधिमंडल के सम्मान में एक भोज का भी आयोजन किया। इंटर-सर्विसेज पब्लिक रिलेशंस (आईएसपीआर) के अनुसार, दोनों पक्षों ने आपसी हित के मुद्दों, क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा की बदलती स्थितियों और द्विपक्षीय संबंधों पर चर्चा की।

फील्ड मार्शल मुनीर ने दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक और समय की कसौटी पर खरे उतरे संबंधों पर प्रकाश डाला। उन्होंने लगातार उच्च-स्तरीय बातचीत, मजबूत संस्थागत संबंधों और आपसी हित के क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के महत्व पर जोर दिया। चीनी प्रतिनिधि ने क्षेत्रीय शांति और स्थिरता में पाकिस्तान के योगदान की सराहना की और दोनों देशों के बीच लंबे समय से चली आ रही रणनीतिक साझेदारी को और आगे बढ़ाने पर भरोसा जताया।

एक अन्य बैठक में, उप प्रधानमंत्री और विदेशमंत्री इशाक डार ने चीन के साथ रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने के लिए पाकिस्तान की प्रतिबद्धता को दोहराया। दोनों पक्षों ने सांस्कृतिक संबंधों और लोगों के बीच आपसी आदान-प्रदान को बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा की। साथ ही, उन्होंने करीबी समन्वय बनाए रखने और द्विपक्षीय संबंधों में सकारात्मक गति को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। पाकिस्तान के राजनीतिक और सैन्य नेतृत्व के साथ लियू की ये मुलाकातें ऐसे समय में हो रही हैं, जब दोनों देश राजनीतिक, आर्थिक, सुरक्षा और संस्थागत क्षेत्रों में अपना सहयोग लगातार बढ़ा रहे हैं।